9 रामधारीसिंह 'दिनकर'

राष्ट्रीय भावनाओं के ओजस्वी गायक कविवर रामधारीसिंह दिनकर का जन्म बिहार राज्यान्तर्गत मुँगेर जिले के सिमरिया गाँव में 30 सितम्बर, 1908ई0 में हुआ था। पटना कालेज से इन्होंने सन् 1933 ई0 में बी0 ए0 किया और फिर एक स्कूल में अध्यापक हो गये। उसके बाद सीतामढ़ी में सब रजिस्ट्रार बने। द्वितीय महायुद्ध में राजकीय प्रचार विभाग में आ गये। उन दिनों भारत में अंग्रेजों का शासन था और अंग्रेजी सरकार का कोई भी कर्मचारी उस सरकार के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता था। दिनकर ने राजकीय सेवा के काल में भी स्वदेशानुराग की भावना से ओत-प्रोत, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति की भावना से परिपूर्ण और क्रान्ति की भावना जगानेवाली रचनाएँ लिखीं।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—30 सितम्बर, 1908 ई0।
- **जन्म-स्थान**—सिमरिया (मुँगेर), बिहार।
- **पिता**—रवि सिंह।
- **भाषा**—परिष्कृत खड़ीबोली।
- **शैली :** प्रबन्ध और मुक्तक।
- **प्रमुख रचनाएँ**—उर्वशी, कुरुक्षेत्र, सामधेनी, रेणुका, परशुराम की प्रतीक्षा।
- **मृत्यु**—24 अप्रैल, 1974 ई0।

सन् 1950 ई0 में इन्हें मुजफ्फरपुर के स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिन्दी विभाग का अध्यक्ष बनाया गया। सन् 1952 ई0 में इन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया और ये दिल्ली आकर रहने लगे। दिनकर की काव्य-साधना निरन्तर जारी रही। सन् 1961 ई0 में इनका बहुचर्चित काव्य **'उर्वशी'** प्रकाशित हुआ। सन् 1964 ई0 में इन्हें केन्द्रीय सरकार की हिन्दी समिति का परामर्शदाता बनाया गया। इस पद से अवकाश ग्रहण करने के अनन्तर ये पटना में रहने लगे। इनके जवान बेटे की मृत्यु ने इस ओजस्वी व्यक्तित्व को सहसा खण्डित कर दिया और तिरुपति के देवविग्रह को अपनी व्यथा-कथा समर्पित करते हुए दिनकर 24 अप्रैल, 1974 ई0 में चेन्नई में परलोक सिधार गये।

इनकी रचनाओं में **'रेणुका'**, **'द्वन्द्वगीत'**, **'हुंकार'**, **'रसवन्ती'**, **'चक्रवाल'**, **'धूप-छाँह'**, **'कुरुक्षेत्र'**, **'रश्मिरथी'**, **'सामधेनी'**, **'नीलकुसुम'**, **'सीपी और शंख'**, **'उर्वशी'**, **'परशुराम की प्रतीक्षा'** और **'हारे को हरिनाम'**–कविता पुस्तकें तथा **'संस्कृति के चार अध्याय'**, **'अर्धनारीश्वर'**, **'रेती के फूल'** तथा **'उजली आग'** आदि गद्य पुस्तकें प्रमुख हैं। इनका गद्य भी उच्चकोटि का तथा प्राञ्जल है। राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्धि इन्हें 'रेणुका' से ही प्राप्त हो गयी थी। उर्वशी (महाकाव्य) पर इन्हें एक लाख रुपये का ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्रदान किया गया था।

दिनकर प्रारम्भ से ही लोक के प्रति निष्ठावान, सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सजग और जनसाधारण के प्रति समर्पित कवि रहे हैं। तभी तो इन्होंने छायावादी कवियों की भाँति काव्य-रचना न करके **'रेणुका'** का आलोक छिटकाया। फिर **'रसवन्ती'**

के प्रणयी गायक के रूप में इनका कुसुम कोमल व्यक्तित्व प्रकट हुआ। लेकिन देश की विषम परिस्थितियों की पुकार ने कवि को भावुकता, कल्पना और स्वप्न के रंगीन लोक से खींचकर ऊबड़-खाबड़ धरती पर लाकर खड़ा कर दिया तथा शोषण की चक्की में पिसते हुए जनसाधारण और उनके भूखे बच्चों का प्रबल समर्थक बना दिया, फिर देश के मुक्तिराग के ओजस्वी गायक के रूप में इनका व्यक्तित्व निखर उठा।

दिनकर के विद्रोहशील व्यक्तित्व को अपने देश के पौराणिक आख्यानों में जो असंगतियाँ दिखायी दीं उन्हें मिटाने के लिए इन्होंने **'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी'** जैसे कथाकाव्यों की रचना की। पहली रचना कुरुक्षेत्र तो वस्तुतः कथाकाव्य नहीं वरन् विचार काव्य है, क्योंकि उसमें हिंसा और अहिंसा की विचारधाराओं का द्वन्द्व प्रदर्शित किया गया है। **'रश्मिरथी'** में सूतपुत्र के रूप में प्रसिद्ध वीर कर्ण का आख्यान है। जागरित पुरुषार्थ के कवि दिनकर शान्तिप्रियता और अहिंसा की आड़ में फैलनेवाली निर्वीर्यता और अकर्मण्यता को व्यक्ति और राष्ट्र दोनों के लिए घातक मानते हैं। इनके व्यक्तित्व का यही प्रखर स्वरूप चीनी आक्रमण के समय प्रज्वलित हो उठा था और इन्होंने देशवासियों को ललकारते हुए **'परशुराम की प्रतीक्षा'** शीर्षक रचना उपस्थित की थी।

दिनकर की काव्य-प्रतिभा का चरमोत्कर्ष उनके नाटकीय कथाकाव्य **'उर्वशी'** में दृष्टिगत होता है। इनका इस रचना का कथा-प्रसंग तो कालिदास के नाटक 'विक्रमोर्वशीयम्' से लिया गया है, लेकिन उसका प्रस्तुतीकरण आधुनिकबोध से अनुप्राणित है। पुरूरवा का स्नेह निवेदन मुक्तछन्द के संविधान में आज उन्मुक्त चेतना को बड़े सशक्त रूप में उपस्थित करता है। उर्वशी ने जो उत्तर दिया वह यद्यपि भावना की भाषा में है, तथापि उसमें आज की जागरूक बुद्धि की नारी का स्वर मुखर है।

दिनकर ने अपनी रचनाओं में अपनी विद्रोहशील मनोवृत्ति और सौन्दर्यचेतना को वाणी देने के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रवृत्तियों को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। इनके **'नीम के पत्ते'** संकलन में आज के राजनेताओं पर बड़े तीखे व्यंग्य हैं। **'आत्मा की आँखें'** में अंग्रेजी की कुछ नयी प्रयोगशील कविताओं के अनुवाद हैं। इस प्रयास के अनन्तर दिनकर जी ने स्वयं भी इस दिशा में कुछ प्रयोग किये। व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन की समस्याओं तथा आपदाओं के कारण एवं दुर्दैव के कठोरतम आघात युवा पुत्र की मृत्यु के कारण इनका ओजस्वी, वर्चस्वी और मनस्वी व्यक्तित्व छोटी-छोटी अतुकान्त कविताओं में टूट-टूट कर पिघल-पिघल कर बह निकला। इनका अन्तिम काव्य संकलन **'हारे को हरिनाम'** ऐसी ही करुण, निराश, दीन, आतुर आत्मा की विनयपत्रिका है।

इनके काव्य में सभी रसों का समावेश है पर वीर रस की प्रधानता है। चित्रण भावपूर्ण तथा कविता का एक-एक शब्द आकर्षक होता है। इनकी रचनाएँ खड़ीबोली में हैं। भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ उर्दू-फारसी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। इन्होंने अधिकतर आधुनिक छन्दों का प्रयोग किया है। इनकी शैली ओजपूर्ण प्रबन्ध शैली है, जिसके माध्यम से इन्होंने पूँजीवाद के प्रति विरोध तथा राष्ट्रीयता की भावना को व्यक्त किया है।

पुरूरवा

[उर्वशी नामक काव्य के तीसरे अंक से उद्धृत ***पुरूरवा*** *के कथन में इस सत्य पर आश्चर्य प्रकट किया गया है कि जो मेधावी, परम प्रतापी एवं प्रचण्ड शक्तिशाली पुरुष कठोर-से-कठोर आघात को सहज ही सह लेता है, वही नारी के सौन्दर्य एवं प्रेम के आगे आत्म-समर्पण क्यों कर देता है? सहज आकर्षक छवि और प्रणय की अनुभूति पुरुष की दुर्दान्तता को पिघलाकर कैसे रस की धार में परिवर्तित कर देती है?]*

कौन है अंकुश, इसे मैं भी नहीं पहचानता हूँ।
पर, सरोवर के किनारे कंठ में जो जल रही है,
उस तृषा, उस वेदना को जानता हूँ।

सिंधु सा उद्दाम, अपरंपार मेरा बल कहाँ है?
गूँजता जिस शक्ति का सर्वत्र जय-जयकार,
उस अटल संकल्प का संबल कहाँ है?

यह शिला-सा वृक्ष, ये चट्टान सी मेरी भुजाएँ,
सूर्य के आलोक से दीपित, समुन्नत भाल,
मेरे प्राण का सागर अगम, उत्ताल, उच्छल है।

सामने टिकते नहीं वनराज, पर्वत डोलते हैं,
काँपता है कुंडली मारे समय का व्याल,
मेरी बाँह में मारुत, गरुड़, गजराज का बल है।

मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं,
उर्वशी! अपने समय का सूर्य हूँ मैं।
अंध तम के भाल पर पावक जलाता हूँ,

बादलों के सीस पर स्यन्दन चलाता हूँ।
पर, न जानें, बात क्या है!
इन्द्र का आयुध पुरुष जो झेल सकता है,

सिंह से बाँहें मिला कर खेल सकता है,
फूल के आगे वही असहाय हो जाता,
शक्ति के रहते हुए निरुपाय हो जाता।

विद्ध हो जाता सहज बंकिम नयन के बाण से,
जीत लेती रूपसी नारी उसे मुस्कान से।

उर्वशी

['उर्वशी' के तीसरे अंक में पुरूरवा को आत्म-परिचय देती हुई अलौकिक सौन्दर्य से सम्पन्न उर्वशी कहती है कि प्रणय और सौन्दर्य-प्रिय नर के अतृप्त हृदय से मेरा उद्भव हुआ है तथा दुर्दान्त जीव भी मुझे देखकर कोमल एवं सरल हो जाता है। संस्कृति, सभ्यता और साहित्य से मैं ही प्रकट होती हूँ।]

पर, क्या बोलूँ? क्या कहूँ?
भ्रान्ति यह देह-भाव।
मैं मनोदेश की वायु व्यग्र, व्याकुल, चंचल;

अवचेत प्राण की प्रभा, चेतना के जल में
मैं रूप-रंग-रस-गन्ध पूर्ण साकार कमल।

मैं नहीं सिन्धु की सुता;
तलातल-अतल-वितल-पाताल छोड़,
नीले समुद्र को फोड़ शुभ्र, झलमल फेनांशुक में प्रदीप्त
नाचती ऊर्मियों के सिर पर
मैं नहीं महातल से निकली।

मैं नहीं गगन की लता
तारकों में पुलकित फूलती हुई,
मैं नहीं व्योमपुर की बाला,
विधु की तनया, चन्द्रिका-संग,
पूर्णिमा सिन्धु की परमोज्ज्वल आभा-तरंग,
मैं नहीं किरण के तारों पर झूलती हुई भू पर उतरी।

मैं नाम-गोत्र से रहित पुष्प,
अम्बर में उड़ती हुई मुक्त आनन्द शिखा
इतिवृत्त हीन,
सौन्दर्य चेतना की तरंग;
सुर-नर-किन्नर-गन्धर्व नहीं,
प्रिय! मैं केवल अप्सरा
विश्वनर के अतृप्त इच्छा-सागर से समुद्भूत।

जन-जन के मन की मधुर वह्नि, प्रत्येक हृदय की उजियाली,
नारी की मैं कल्पना चरम नर के मन में बसने वाली।
विषधर के फण पर अमृतवर्ति,
उद्धत, अदम्य, बर्बर बल पर
रूपांकुश क्षीण मृणाल तार।

मेरे सम्मुख नत हो रहते गजराज मत्त;
केसरी, शरभ, शार्दूल भूल निज हिंस्र भाव
गृह-मृग समान निर्विष अहिंस्र बनकर जीते।

मेरी भ्रू-स्मिति को देख चकित, विस्मित, विभोर
शूरमा निमिष खोले अवाक् रह जाते हैं,
श्लथ हो जाता स्वयमेव शिंजिनी का कसाव,
संस्रस्त करों से धनुष-बाण गिर जाते हैं।

कामना वह्नि की शिखा मुक्त मैं अनवरुद्ध,
मैं अप्रतिहत, मैं दुर्निवार;
मैं सदा घूमती फिरती हूँ
पवनान्दोलित वारिद-तरंग पर समासीन
नीहार-आवरण में अम्बर के आर-पार,
उड़ते मेघों को दौड़ बाहुओं में भरती,
स्वप्नों की प्रतिमाओं का आलिंगन करती।

विस्तीर्ण सिन्धु के बीच शून्य, एकान्त द्वीप,
यह मेरा उर।

देवालय में देवता नहीं, केवल मैं हूँ।
मेरी प्रतिमा को घेर उठ रही अगुरु-गन्ध,
बज रहा अर्चना में मेरी मेरा नूपुर।
भू-नभ का सब संगीत नाद मेरे निस्सीम प्रणय का है,
सारी कविता जयगान एक मेरी त्रयलोक-विजय का है। **('उर्वशी' से)**

अभिनव मनुष्य

[कुरुक्षेत्र के अन्तिम सर्ग से उद्धृत इस रचना में आधुनिक मनुष्य की भौतिक उन्नति की विडम्बना की ओर संकेत किया गया है, जो हार्दिक और आध्यात्मिक विकास के अभाव में अभिशाप बन गयी है। नित्य नूतनता का लोभी यह अभिनव मनुष्य यह नहीं समझ पाया कि पड़ोसी के दुःख-दर्द से अछूता और दूर रहकर अज्ञात ग्रह-नक्षत्रों की खोज और यात्रा व्यर्थ है। धरती पर रहना तथा धरती के मनुष्यों को आत्मीयता के घेरे में समेट लेना ही अभिनव मनुष्य की वास्तविक जय-यात्रा है।]

है बहुत बरसी धरित्री पर अमृत की धार,
पर नहीं अब तक सुशीतल हो सका संसार।
भोग-लिप्सा आज भी लहरा रही उद्दाम,
बह रही असहाय नर की भावना निष्काम।

भीष्म हों अथवा युधिष्ठिर, या कि हों भगवान्,
बुद्ध हों कि अशोक, गाँधी हों कि ईसु महान,
सिर झुका सबको सभी को श्रेष्ठ निज से मान,
मात्र वाचिक ही उन्हें देता हुआ सम्मान,
दग्ध कर पर को, स्वयं भी भोगता दुख-दाह,
जा रहा मानव चला अब भी पुरानी राह।

आज की दुनिया विचित्र, नवीन;
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।
है बँधे नर के करों में वारि, विद्युत भाप,
हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप।
है नहीं बाकी कहीं व्यवधान,
लाँघ सकता नर सरित, गिरि सिन्धु एक समान।

शीश पर आदेश कर अवधार्य,
प्रकृति के सब तत्त्व करते हैं मनुज के कार्य।
मानते हैं हुक्म मानव का महा वरुणेश,
और करता शब्दगुण अम्बर वहन संदेश।
नव्य नर की मुष्टि में विकराल
हैं सिमटते जा रहे प्रत्येक क्षण दिक्काल
यह मनुज,

जिसका गगन में जा रहा है यान,

काँपते जिसके करों को देखकर परमाणु।

खोलकर अपना हृदयगिरि, सिन्धु, भू, आकाश,
हैं सुना जिसको चुके निज गुह्यतम इतिहास।
खुल गये परदे, रहा अब क्या यहाँ अज्ञेय?
किन्तु नर को चाहिए नित विघ्न कुछ दुर्जेय;
सोचने को और करने को नया संघर्ष;
नव्य जय का क्षेत्र, पाने को नया उत्कर्ष।

पर, धरा सुपरीक्षिता, विश्लिष्ट स्वादविहीन,
यह पढ़ी पोथी न दे सकती प्रवेग नवीन।
एक लघु हस्तामलक यह भूमि-मंडल गोल,
मानवों ने पढ़ लिये सब पृष्ठ जिसके खोल।

किन्तु नर-प्रज्ञा सदा गतिशालिनी, उद्दाम,
ले नहीं सकती नहीं रुक एक पल विश्राम।
यह परीक्षित भूमि, यह पोथी पठित, प्राचीन,
सोचने को दे उसे अब बात कौन नवीन?

यह लघुग्रह भूमिमण्डल, व्योम यह संकीर्ण,
चाहिए नर को नया कुछ और जग विस्तीर्ण।
यह मनुज ब्रह्माण्ड का सबसे सुरम्य प्रकाश,
कुछ छिपा सकते न जिससे भूमि या आकाश।
यह मनुज, जिसकी शिखा उद्दाम,
कर रहे जिसको चराचर भक्तियुक्त प्रणाम।
यह मनुज, जो सृष्टि का शृंगार,
ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का आगार।
'व्योम से पाताल तक सब कुछ इसे है ज्ञेय',
पर, न यह परिचय मनुज का, यह न उसका श्रेय।
श्रेय उसका बुद्धि पर चैतन्य उर की जीत;
श्रेय मानव की असीमित मानवों से प्रीत,
एक नर से दूसरे के बीच का व्यवधान
तोड़ दे जो, बस, वही ज्ञानी, वही विद्वान्,
और मानव भी वही।
सावधान मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तजकर मोह, स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी अज्ञान;
फूल काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान,
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।।

('कुरुक्षेत्र' से)

अभ्यास प्रश्न

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(पुरूरवा)

(क) मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं,
उर्वशी! अपने समय का सूर्य हूँ मैं।
अंध तम के भाल पर पावक जलाता हूँ,

बादलों के सीस पर स्यन्दन चलाता हूँ।
पर, न जानें, बात क्या है!
इन्द्र का आयुध पुरुष जो झेल सकता है,

सिंह से बाँहें मिला कर खेल सकता है,
फूल के आगे वही असहाय हो जाता,
शक्ति के रहते हुए निरुपाय हो जाता।

विद्ध हो जाता सहज बंकिम नयन के बाण से,
जीत लेती रूपसी नारी उसे मुस्कान से। **[2019 CS]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) पुरूरवा उर्वशी को अपना परिचय किस रूप में देता है?
(iii) पुरुष फूल-जैसी कोमल नारी के सामने क्यों असहाय हो जाता है?
(iv) 'स्यन्दन' और 'आयुध' शब्दों का क्या अर्थ है?
(v) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(ख) कौन है अंकुश, इसे मैं भी नहीं पहचानता हूँ।
पर, सरोवर के किनारे कंठ में जो जल रही है;
उस तृषा, उस वेदना को जानता हूँ।
सिंधु सा उद्दाम, अपरंपार मेरा बल कहाँ है?
गूँजता जिस शक्ति का सर्वत्र जय जयकार,
उस अटल संकल्प का संबल कहाँ है?

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पुरूरवा अपने सिन्धु के समान बल के सन्दर्भ में क्या कहता है?
(iv) प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों में कौन अपनी शक्ति का परिचय दे रहा है?
(v) पुरूरवा अपनी शक्ति का प्रदर्शन किससे कर रहा है?

(उर्वशी)

(ग) मैं नाम-गोत्र से रहित पुष्प,
अम्बर में उड़ती हुई मुक्त आनन्द शिखा
इतिवृत्त हीन,
सौन्दर्य चेतना की तरंग;
सुर-नर-किन्नर-गन्धर्व नहीं,
प्रिय! मैं केवल अप्सरा
विश्वनर के अतृप्त इच्छा-सागर से समुद्‌भूत।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों में उर्वशी किससे कह रही है?
(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(iv) इस पद्यांश का क्या प्रसंग है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(घ) मेरे सम्मुख नत हो रहते गजराज मत्त;
केसरी, शरभ, शार्दूल भूल निज हिंस्र भाव
गृह-मृग समान निर्विष, अहिंस्र बनकर जीते।
मेरी भ्रू-स्मिति को देख चकित, विस्मित, विभोर
शूरमा निमिष खोले अवाक् रह जाते हैं;
श्लथ हो जाता स्वयमेव शिंजिनी का कसाव
संत्रस्त करों से धनुष-बाण गिर जाते हैं।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) उर्वशी के समक्ष वीरों के धनुष की डोर की क्या दशा हो जाती है?
(iv) उर्वशी को देखकर बड़े-बड़े वीरों की बोली क्यों बन्द हो जाती है?
(v) उर्वशी के सामने हिरन जैसे कौन बन जाते हैं?

(ङ) देवालय में देवता नहीं, केवल मैं हूँ।
मेरी प्रतिमा को घेर उठ रही अगुरु-गन्ध,
बज रहा अर्चना में मेरी मेरा नूपुर।
भू-नभ का सब संगीत नाद मेरे निस्सीम प्रणय का है,
सारी कविता जयगान एक मेरी त्रयलोक विजय का है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) उर्वशी ने मन्दिरों में किसका वास बताया है?
(iv) संगीत, नृत्य आदि समस्त कलाओं की प्रेरक शक्ति कौन है?
(v) प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(च) मैं नहीं गगन की लता
तारकों में पुलकित फूलती हुई,
मैं नहीं व्योमपुर की बाला
विधु की तनया, चन्द्रिका-संग
पूर्णिमा-सिन्धु की परमोज्ज्वल आभा-तरंग,
मैं नहीं किरण के तारों पर झूलती हुई भू पर उतरी।
मैं नाम-गोत्र से रहित पुष्प
अम्बर में उड़ती हुई मुक्त आनन्द शिखा
इतिवृत्त हीन,
सौन्दर्य चेतना की तरंग
सुर-नर-किन्नर-गन्धर्व नहीं
प्रिय! मैं केवल अप्सरा
विश्वनर के अतृप्त इच्छा-सागर से समुद्भूत।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में उर्वशी ने अपना परिचय किसको दिया है?
(iv) प्रस्तुत पद्य-पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(v) आकाश में उड़ती हुई स्वच्छन्द आनन्द की शिखा कौन है?

(अभिनव-मनुष्य)

(छ) यह लघुग्रह भूमिमण्डल, व्योम यह संकीर्ण,
चाहिए नर को नया कुछ और जग विस्तीर्ण।
यह मनुज ब्रह्माण्ड का सबसे सुरम्य प्रकाश,
कुछ छिपा सकते न जिससे भूमि या आकाश।
यह मनुज, जिसकी शिखा उद्दाम,
कर रहे जिसको चराचर भक्तियुक्त प्रणाम।
यह मनुज, जो सृष्टि का शृंगार,
ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का आगार।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) आज मनुष्य सम्पूर्ण सृष्टि की शोभा क्यों है?
(iii) कवि के अनुसार मानवता क्या है?
(iv) इस पद्यांश में कवि ने किस भाव को स्पष्ट किया है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ज) सावधान मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तजकर मोह, स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी अज्ञान;
फूल काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान,
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।। **[2020 ZL]**

प्रश्न– (i) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) विज्ञान को 'तलवार' क्यों कहा है?
(iii) विज्ञान का प्रयोग करने में उसे शिशु समाज क्यों कहा गया है?
(iv) पूरे पद में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।
(vi) कवि मनुष्य को सावधान क्यों कर रहा है?
(vii) मनुष्य को अज्ञान शिशु क्यों कहा गया?
(viii) किसकी धार बड़ी तीखी है?
(ix) यहाँ मानव को क्या संदेश दिया गया है?

(झ) आज की दुनिया विचित्र, नवीन;
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।
है बँधे नर के करों में वारि, विद्युत भाप,
हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप।
है नहीं बाकी कहीं व्यवधान,
लाँघ सकता नर सरित, गिरि सिन्धु एक समान।

प्रश्न– (i) आज के मनुष्य ने किस पर विजय प्राप्त कर ली है?
(ii) किसके हुक्म पर पवन का ताप चढ़ता-उतरता है?
(iii) 'कहीं भी व्यवधान नहीं बाकी है' का क्या अर्थ है?
(iv) रेखांकित पंक्ति का भावार्थ लिखिए।
(v) कविता का शीर्षक तथा कवि का नाम बताइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नांकित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी अज्ञान।
(ख) व्योम से पाताल तक सब कुछ इसे है ज्ञेय।
(ग) चाहिए नर को नया कुछ और जग विस्तीर्ण।
(घ) एक नर से दूसरे के बीच का व्यवधान,तोड़ दे जो, वही ज्ञानी, वही विद्वान।
(ङ) श्रेय मानव की असीमित मानवों से प्रीत।
(च) जीत लेती रूपसी नारी उसे मुस्कान से।
2. रामधारीसिंह 'दिनकर' का जीवन-परिचय लिखिए।
अथवा रामधारीसिंह 'दिनकर' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
[2016 SE, 17 MA, MB, MF, 19 CM, CN, CP, 20 ZA, ZH, ZI]
3. रामधारीसिंह 'दिनकर' का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।
4. स्वपठित कविताओं के आधार पर समीक्षा कीजिए कि दिनकर जी स्वदेशानुराग की भावना से ओत-प्रोत थे।
5. 'अभिनव मनुष्य' के आधार पर आधुनिक समाज का चित्रण कीजिए।
6. संकलित अंश के आधार पर पुरूरवा के पुरुषार्थ का विवेचन कीजिए।
7. 'अभिनव मनुष्य' में व्यक्त 'दिनकर' के विचारों की तुलना कीजिए।
8. दिनकर की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **[2017 MA, MB, MG]**

9. दिनकर का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।
10. दिनकर जी ने 'अभिनव मनुष्य' को जो सन्देश दिया है, उस पर प्रकाश डालिए।
11. रामधारीसिंह 'दिनकर' की रचनाओं में राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।
12. रामधारीसिंह 'दिनकर' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
13. रामधारीसिंह 'दिनकर' का साहित्यिक परिचय तथा उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **[2020 ZK, ZL]**

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कामायनी (श्रद्धा) और उर्वशी के सौन्दर्य-निरूपण की तुलना कीजिए।
2. अभिनव मनुष्य की उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।
3. कवि ने अभिनव मनुष्य को किसलिए सावधान किया है?
4. रामधारीसिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित 'उर्वशी' में अभिव्यक्त जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिए।
5. 'उर्वशी' के वर्णन की विशेषताएँ बताइए।
6. दिनकर की 'अभिनव मनुष्य' कविता का क्या सन्देश है?
7. रामधारीसिंह 'दिनकर' की कृति 'उर्वशी' के आधार पर पुरूरवा के पुरुषार्थ का विवेचन कीजिए।

काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नांकित काव्य-पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

   (क) मेरी बाँह में मारुत, गरुड़, गजराज का बल है।

   (ख) तलातल-अतल-वितल-पाताल छोड़,
   नीले समुद्र को फोड़ शुभ झलमल फेनांशुक में प्रदीप्त।
2. विशेषोक्ति अलंकार का लक्षण बताते हुए 'पुरूरवा' शीर्षक से एक उदाहरण लिखिए।